एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गेंदा की अन्नत खेती

(*सुनील कुमार सोलंकी)
पुष्प विज्ञान एवं भूनिर्माण विभाग, उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sunilsolankijat@gmail.com

गेंदा एक लोकप्रिय फूलों की फसल है जिसे इसके खूबसूरत फूलों और औषधीय गुणों के कारण उगाया जाता है। इसकी खेती देश के लगभग हर कोने में की जाती है, विशेष रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक अवसरों पर इसकी भारी मांग रहती है। इसके फूलों का उपयोग सजावट, मालाएं बनाने, और औषधियों के रूप में किया जाता है।

गेंदा की किस्में

गेंदा की खेती के लिए मुख्य रूप से दो प्रजातियों की पहचान की जाती है

अफ्रीकीन गेंदा- (*टैगेटेस इरेक्टा*) यह किस्म बड़े आकार के फूलों और पौधों के लिए जानी जाती है। इसके फूल पीले और नारंगी रंग के होते हैं और इनमें औसतन 7–10 सेमी व्यास होता है।

फ्रेंच गेंदा- (*टैगेटेस पैटुला*) यह किस्म छोटे आकार के फूलों और पौधों के लिए प्रसिद्ध है। इसके फूल छोटे होते हैं, लेकिन इनकी विविधता और रंगों की सुंदरता इसे विशेष बनाती है।

अफ्रीकीन गेंदा

फ्रेंच गेंदा

जलवायु और मृदा

गेंदा एक ऐसी फसल है जो विभिन्न प्रकार की जलवायु और मृदा में उगाई जा सकती है। इसके लिए निम्नलिखित स्थितियाँ आदर्श मानी जाती हैं।

जलवायु गेंदा की खेती के लिए 15° से 30° तापमान आदर्श होता है। यह शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन दोनों मौसमों में उगाई जा सकती है, लेकिन मानसून के बाद का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है।

मृदा अच्छी जल निकासी वाली दोमट मृदा गेंदा की खेती के लिए सबसे अच्छी होती है। मृदा का पीएच स्तर 6.5–7.5 के बीच होना चाहिए।

बुवाई का समय

गेंदा की खेती तीन मुख्य मौसमों में की जाती है

- **ग्रीष्मकाल:** फरवरी–मार्च
- **वर्षा ऋतु:** जून–जुलाई

- **शीतकालः** सितंबर–अक्टूबर

पौधशाला में 4–6 सप्ताह तक पौधों को तैयार किया जाता है और फिर उन्हें मुख्य खेत में स्थानांतरित किया जाता है।

खेती की विधि और बीज की तैयारी- गेंदे के बीज को पौधशाला में उगाया जाता है। बीज की रोपाई करने से पहले उन्हें हल्के पानी में भिगोकर रखना फायदेमंद होता है, जिससे बीज का अंकुरण जल्दी हो सके।

पौधों की रोपाई

बीज अंकुरण के बाद, 4–6 सप्ताह में पौधों को खेत में रोपण के लिए तैयार किया जाता है। पौधों को लगभग 30 X 30 सेमी की दूरी पर रोपा जाता है, जिससे पौधे सही ढंग से विकसित हो सकें।

खाद और उर्वरक

गेंदा की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए उर्वरकों का सही उपयोग महत्वपूर्ण होता है। 15–20 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाई जाती है। इसके अलावा, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, और पोटाश का सही अनुपात में उपयोग करना आवश्यक होता है।

सिंचाई

गेंदा के पौधों को पर्याप्त मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन ज्यादा पानी देने से जड़ें सड़ सकती हैं। गर्मियों में 7–10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जानी चाहिए और सर्दियों में 10–15 दिनों के अंतराल पर।

कीट और रोग नियंत्रण

गेंदा के पौधों पर कुछ सामान्य कीट और रोग आ सकते हैं, जिनमें सफेद मक्खी, एफिड्स, और पत्तियों का पीला पड़ना प्रमुख हैं। इनसे बचाव के लिए जैविक कीटनाशकों और रासायनिक स्प्रे का उपयोग किया जा सकता है। समय–समय पर पौधों का निरीक्षण और निवारक उपाय करना आवश्यक है।

कटाई और उत्पादनः गेंदा के फूलों को 2–3 महीनों के बाद तूडाई की जाति है। तूडाई तब की जाती है जब फूल पूरी तरह खिल जाते हैं। एक हेक्टेयर से 10–15 टन फूलों का उत्पादन संभव है, जो बाजार में अच्छे दामों पर बेचे जा सकते हैं।

आर्थिक लाभ

गेंदा एक कम समय में अच्छी पैदावार देने वाली फसल है, जिससे किसानों को अच्छा आर्थिक लाभ मिल सकता है। धार्मिक अवसरों, त्योहारों, और शादी–ब्याह के मौसम में इसकी मांग बढ़ जाती है, जिससे किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।